

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 21-01-2025

विषय सूची

यूरोपीय संघ के साथ आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए भारत की 6 सूत्री योजना
ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने पर भारत की रणनीतिक प्रतिक्रिया
डोनाल्ड ट्रम्प (अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति) द्वारा प्रथम कार्यकारी आदेश
RBI ने परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनियों (ARCs) के लिए मानदंड जारी किए
वैश्विक आर्थिक संभावनाएँ (GEP) रिपोर्ट 2025
स्वस्थ आहार का व्यय वहन न कर पाने वाली जनसंख्या में वृद्धि
भारत कॉफी का 7वाँ सबसे बड़ा उत्पादक बना

संक्षिप्त समाचार

कोणार्क मंदिर
नारायण गुरु
पंजाब में प्रजामंडल आंदोलन
चोल साम्राज्य में महिलाएँ
रत्नागिरी बौद्ध परिसर में उत्खनन
एंटिटी लॉकर
न्यूरोमॉर्फिक डिवाइस
व्हाइट गुड्स
विकास इंजन (Vikas Engine)
अभ्यास ला पेरोस

यूरोपीय संघ के साथ आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए भारत की 6 सूत्री योजना

संदर्भ

- भारत ने यूरोपीय संघ (EU) के साथ सुदृढ़ आर्थिक साझेदारी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 6 सूत्री योजना प्रस्तुत की है।

6-सूत्री योजना के संबंध में

- **विश्वसनीय साझेदारी:** 2 अरब की संयुक्त जनसंख्या के लिए अभूतपूर्व अवसर सृजित करने हेतु आर्थिक संबंधों को मजबूत करना।
 - सतत सहयोग के लिए विश्वास की नींव बनाएँ।
- **निष्पक्ष व्यापार एजेंडा:** टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं को कम करने के लिए पारस्परिक रूप से लाभकारी मुक्त व्यापार समझौता (FTA) विकसित करना।
 - छोटे व्यवसायों, किसानों और मछुआरों के लिए लाभ सुनिश्चित करना तथा न्यायसंगत व्यापार प्रथाओं को बढ़ावा देना।
- **उच्च गुणवत्ता वाला उत्पादन:** मानकों में सामंजस्य स्थापित करने और गुणवत्ता और स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करते हुए "शून्य दोष, शून्य प्रभाव" विनिर्माण को प्राप्त करने के लिए यूरोपीय संघ की सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाना।
- **तकनीकी सहयोग:** संयुक्त रूप से अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों का विकास करना तथा महत्वपूर्ण कच्चे माल की आपूर्ति शृंखला को सुदृढ़ करना।
 - गैर-बाज़ार अर्थव्यवस्थाओं के विरुद्ध लचीलापन बढ़ाना तथा प्रौद्योगिकी साझाकरण में निष्पक्ष व्यवहार को बढ़ावा देना।
- **सतत विकास:** साझा लेकिन विभेदित उत्तरदायित्व के सिद्धांत के अंतर्गत व्यापार को सतत विकास लक्ष्यों के साथ संरेखित करना।
 - नवीकरणीय ऊर्जा, हरित प्रौद्योगिकियों और पर्यावरण संरक्षण में सहयोग करना।
- **पारस्परिक विकास:** पारस्परिक विकास के लिए "जीवित सेतु" के रूप में कार्य करने हेतु भारत के प्रतिभा पूल का लाभ उठाना।
 - नवाचार एवं साझा समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक और आर्थिक आदान-प्रदान को बढ़ाना।

भारत-यूरोपीय संघ संबंध: एक अवलोकन

- **राजनीतिक सहयोग:** दोनों देशों के मध्य संबंध 1960 के दशक से चले आ रहे हैं, तथा 1994 के सहयोग समझौते से इसमें उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
 - **प्रमुख माइलस्टोन:** 2000: प्रथम भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन।
 - **2004:** हेग में पाँचवें भारत-यूरोपीय संघ शिखर सम्मेलन में इसे रणनीतिक साझेदारी में उन्नत किया गया।
- **आर्थिक सहयोग:** द्विपक्षीय व्यापार 137.41 बिलियन अमेरिकी डॉलर (2023-24) तक पहुँच गया, जिससे यूरोपीय संघ भारत का वस्तुओं के मामले में सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया। सेवाओं में द्विपक्षीय व्यापार 51.45 बिलियन अमेरिकी डॉलर (2023) था।

- **जल प्रबंधन:** 2016 में स्थापित भारत-यूरोपीय संघ जल साझेदारी (IEWP) जल प्रबंधन में रूपरेखा को बढ़ाती है।
- **परमाणु ऊर्जा:** परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग पर अनुसंधान एवं विकास सहयोग के लिए 2020 में समझौता।
- **व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद (TTC):** व्यापार, प्रौद्योगिकी और सुरक्षा पर सहयोग को बढ़ावा देने के लिए 2023 में स्थापित किया जाएगा।

भारत-यूरोपीय संघ सहयोग में चुनौतियाँ

- **विरासत व्यापार मुद्दे:** टैरिफ, गैर-टैरिफ बाधाओं और मानकों के सामंजस्य पर लगातार विवाद।
- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण:** बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPR) को संरक्षित करने और प्रौद्योगिकी का उचित साझाकरण सुनिश्चित करने में चुनौतियाँ।
- **महत्वपूर्ण कच्चा माल:** भू-राजनीतिक तनाव और प्रतिस्पर्धा दोनों पक्षों के लिए महत्वपूर्ण संसाधनों को सुरक्षित करने में बाधा उत्पन्न करती है।

आगे की राह

- **FTA वार्ता में तीव्रता लाना:** बाजार पहुँच, व्यापार सुविधा और विवाद समाधान से संबंधित मुद्दों को सुलझाने पर ध्यान केंद्रित करना।
- **उन्नत अनुसंधान एवं विकास साझेदारी:** तकनीकी सहयोग को बढ़ाने के लिए संयुक्त अनुसंधान केंद्र और नवाचार केंद्र स्थापित करना।
- **स्थिरता पर ध्यान:** दीर्घकालिक पर्यावरणीय और आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए हरित प्रौद्योगिकियों और नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश करें।

निष्कर्ष

- भारत की 6-सूत्री योजना, भारत-यूरोपीय संघ संबंधों को प्रगाण करने के लिए एक मजबूत रोडमैप प्रस्तुत करती है, जिसमें व्यापार, प्रौद्योगिकी एवं स्थिरता जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान दिया गया है। पूरक शक्तियों का लाभ उठाकर और वर्तमान चुनौतियों का समाधान करके, यह साझेदारी वैश्विक आर्थिक स्थिरता तथा लचीलेपन को प्रोत्साहन देने में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभा सकती है।

Source: TH

ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने पर भारत की रणनीतिक प्रतिक्रिया

संदर्भ

- विदेश मंत्री एस जयशंकर ने वाशिंगटन में जापानी एवं ऑस्ट्रेलियाई समकक्षों से मुलाकात की और द्विपक्षीय संबंधों के साथ-साथ क्वाड घटनाक्रम की समीक्षा की।

जयशंकर की वाशिंगटन यात्रा की प्रमुख प्राथमिकताएँ

- **मोदी-ट्रम्प की प्रारंभिक बैठक:** प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति ट्रम्प के मध्य सुदृढ़ सामंजस्य को आगे बढ़ाया जा रहा है, जो ट्रम्प के प्रथम कार्यकाल के दौरान स्थापित हुआ था।
 - इसका ध्यान रक्षा, ऊर्जा सुरक्षा और आतंकवाद-निरोध पर सहयोग को सुदृढ़ करने पर है।

- आगामी वर्षों में उच्च स्तरीय द्विपक्षीय संबंधों के लिए वातावरण तैयार करना।
- **क्वाड शिखर सम्मेलन और क्षेत्रीय सुरक्षा:** स्वतंत्र एवं खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र को सुनिश्चित करने के लिए भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के मध्य सहयोग को सुदृढ़ करके क्वाड को मजबूत करना।
 - यह भारत की एक्ट ईस्ट नीति के अनुरूप होगा तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और संपर्क को बढ़ावा देगा।
- **व्यापार और आर्थिक सहयोग:** भारतीय इस्पात और एल्युमीनियम पर अमेरिकी शुल्क सहित दीर्घकालिक टैरिफ मुद्दों का समाधान करना। द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए निष्पक्ष व्यापार प्रथाओं का समर्थन करना।
- **आव्रजन एवं प्रतिभा गतिशीलता:** सुगम वीजा प्रक्रिया का समर्थन करना तथा भारतीय पेशेवरों को प्रभावित करने वाले प्रतिबंधों का समाधान करना।
 - भारतीय-अमेरिकी समुदाय के साथ संबंधों को सुदृढ़ करके भारतीय प्रवासियों को शामिल करना, जो भारत-अमेरिका संबंधों में एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

एजेंडा का रणनीतिक महत्त्व

- **वैश्विक भू-राजनीतिक परिवर्तनों को संबोधित करना:** एशिया में, विशेष रूप से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती आक्रामकता का प्रतिसंतुलन करना।
 - क्षेत्रीय शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए क्वाड को मजबूत करना।
- **आर्थिक सामंजस्य:** वैश्विक तकनीकी केंद्र के रूप में भारत की स्थिति का लाभ उठाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अर्धचालक और साइबर सुरक्षा जैसे उभरते क्षेत्रों में सहयोग का विस्तार करना।
- **साझा लोकतांत्रिक मूल्य:** लोकतंत्र और नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के प्रति पारस्परिक प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करना।

आगे की चुनौतियाँ

- **व्यापार एवं टैरिफ विवाद:** वस्तु टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं पर लगातार असहमति।
- **आव्रजन प्रतिबंध:** भारतीय पेशेवरों के लिए अमेरिकी वीजा सीमा और देरी से निपटना।
- **भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता:** रूस जैसे वैश्विक संघर्षों पर अलग-अलग प्रवृत्ति के कारण सहयोग पर दबाव पड़ सकता है।
- **प्रौद्योगिकी बाधाएँ:** भारत को संवेदनशील प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर प्रतिबंध रक्षा सहयोग को प्रभावित करते हैं।
- **घरेलू दबाव:** दोनों देशों में राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियाँ नीतिगत प्राथमिकताओं को प्रभावित कर सकती हैं।

आगे की राह

- **व्यापार समझौतों को सुव्यवस्थित करना:** पारस्परिक आर्थिक लाभ सुनिश्चित करने के लिए बाधाओं को कम करना।

- **आव्रजन सुधारों को आगे बढ़ाना:** प्रतिभा गतिशीलता और वीजा दक्षता को सुविधाजनक बनाने के लिए रूपरेखा पर सहयोग करना।
- **क्वाड भागीदारी को बढ़ाना:** क्षेत्रीय संपर्क और समुद्री सुरक्षा पहल को मजबूत करना।
- **नवीकरणीय ऊर्जा सहयोग को बढ़ावा देना:** स्वच्छ और सतत ऊर्जा प्रौद्योगिकियों में संयुक्त उद्यमों की खोज करना।
- **लगातार उच्च स्तरीय वार्ता:** उभरते अवसरों और चुनौतियों से निपटने के लिए नियमित वार्ता की स्थापना।

निष्कर्ष

- विदेश मंत्री एस. जयशंकर का वाशिंगटन एजेंडा भारत-अमेरिका संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए एक रणनीतिक दृष्टिकोण को रेखांकित करता है।
- व्यापार, आव्रजन और क्षेत्रीय सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान देकर, एजेंडा चुनौतियों को पारस्परिक विकास के अवसरों में बदलने का प्रयास करता है। यह व्यापक दृष्टिकोण अमेरिका के साथ मजबूत साझेदारी के प्रति भारत की प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है, तथा साझा समृद्धि और वैश्विक नेतृत्व का भविष्य सुनिश्चित करता है।

Source: ET

डोनाल्ड ट्रम्प (अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति) द्वारा प्रथम कार्यकारी आदेश

समाचार में

- हाल ही में, अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने कार्यकाल के प्रथम दिन विभिन्न कार्यकारी आदेशों पर हस्ताक्षर किए।

कार्यकारी आदेशों का परिचय

- ये संघीय सरकार के प्रबंधन के लिए राष्ट्रपति द्वारा जारी किये गये आधिकारिक निर्देश हैं।
- वे संघीय एजेंसियों को निर्देश दे सकते हैं, रिपोर्ट माँग सकते हैं या प्रमुख नीतियों को क्रियान्वित कर सकते हैं।
 - जबकि कुछ आदेश छोटे हैं, जैसे संघीय कर्मचारियों को छुट्टियाँ प्रदान करना, अन्य महत्वपूर्ण नीतिगत परिवर्तन करते हैं, जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर विनियमन स्थापित करना।
- राष्ट्रपति प्रायः ऐसे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्यकारी आदेशों का प्रयोग करते हैं जो कांग्रेस के माध्यम से पारित नहीं हो सकते।

ट्रम्प के कार्यकारी आदेशों की मुख्य विशेषताएँ

- **क्षमादान:** 1,500 व्यक्तियों को क्षमादान दिया गया, जिनमें 6 जनवरी, 2021 के कैपिटल दंगे में शामिल लोग भी शामिल हैं, जैसे कि प्राउड बॉयज़ और ओथ कीपर्स के सदस्य।
- **आव्रजन:** बाइडेन युग की नीतियों को उलट दिया गया, सभी अनिर्दिष्ट व्यक्तियों के निर्वासन को प्राथमिकता दी गई।
 - अमेरिकी शरणार्थी पुनर्वास कार्यक्रम को चार माह के लिए निलंबित कर दिया गया।

- अमेरिका-मेक्सिको सीमा पर राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा की गई तथा आव्रजन प्रवर्तन में सहायता के लिए सेना भेजी गई।
- जन्मसिद्ध नागरिकता को समाप्त करने का प्रस्ताव, प्रत्याशित कानूनी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
- **बिडेन की नीतियों को रद्द करना:** बिडेन द्वारा पारित 78 कार्यकारी आदेशों को रद्द कर दिया गया, जिनमें कोविड राहत, विविधता और स्वच्छ ऊर्जा जैसे विषय सम्मिलित थे।
 - संघीय एजेंसियों को कथित राजनीतिक उत्पीड़न से संबंधित रिकॉर्ड संरक्षित करने का निर्देश दिया गया।
- **विविधता और समावेशन:** विविधता, समानता और समावेशन (DEI) और LGBTQ+ सुरक्षा को बढ़ावा देने वाले बिडेन के कार्यकारी आदेशों को रद्द कर दिया गया।
- **सरकारी दक्षता:** तत्काल कानूनी चुनौतियों का सामना कर रहे संघीय परिचालन को सुव्यवस्थित करने के लिए एलन मस्क के नेतृत्व में सरकारी दक्षता विभाग (DOGE) का गठन किया गया।
- **जलवायु एवं ऊर्जा:** पेरिस जलवायु समझौते से हट गये। आर्कटिक और संघीय भूमि पर तेल ड्रिलिंग पर प्रतिबंध हटा दिए गए, तथा ऊर्जा स्वतंत्रता पर ध्यान केंद्रित किया गया।
 - तेल और गैस उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय ऊर्जा आपातकाल की घोषणा की गई।
- **मुद्रास्फीति और अर्थव्यवस्था:** बिडेन की नीतियों को मुद्रास्फीति में योगदान देने वाला बताते हुए, विभागों को कीमतें कम करने के लिए कदम उठाने का आदेश दिया गया।
 - कनाडा और मैक्सिको पर 25% टैरिफ लगाने की योजना का संकेत दिया गया तथा एजेंसियों को व्यापार समझौतों के प्रति चीन के अनुपालन का आकलन करने का निर्देश दिया गया।
- **विदेश नीति और सहायता:** अमेरिकी हितों के साथ इसके संरक्षण का आकलन करने के लिए विदेशी विकास सहायता को 90 दिनों के लिए रोक दिया गया।
 - OECD वैश्विक न्यूनतम कॉर्पोरेट कर समझौते को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया गया कि इसके लिए कांग्रेस की मंजूरी की आवश्यकता है।
- **मुक्त भाषण:** अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को पुनर्स्थापित करने और ऑनलाइन प्लेटफार्मों की संघीय सेंसरशिप को समाप्त करने के उद्देश्य से एक आदेश पर हस्ताक्षर किए गए।
- **स्वास्थ्य नीति:** कोविड-19 महामारी से निपटने में अपनी विफलता का उदाहरण देते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) से अलग हो गया।

अमेरिका-भारत संबंधों पर प्रभाव

- **व्यापार नीतियाँ:** ट्रम्प के संरक्षणवादी प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप भारतीय निर्यात पर टैरिफ बढ़ सकता है, क्योंकि अमेरिका भारत का सबसे बड़ा निर्यात बाजार है।
 - संभावित विश्व व्यापार संगठन नियम उल्लंघन द्विपक्षीय व्यापार संबंधों को जटिल बना सकता है।
- **विनिर्माण क्षेत्र में अवसर:** चीन के प्रति ट्रम्प का आक्रामक प्रवृत्ति भारत के विनिर्माण क्षेत्र के लिए दरवाजे प्रशस्त कर सकता है, विशेष रूप से उत्पादन-जुड़े प्रोत्साहन (PLIs) के माध्यम से।
 - हालाँकि, भारत को इस अवसर का लाभ उठाने के लिए संरचनात्मक सुधारों को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

- **प्रौद्योगिकी और नवाचार:** भारत की STEM प्रतिभा को AI, क्वांटम कंप्यूटिंग और उभरती प्रौद्योगिकियों में अमेरिकी निवेश से लाभ हो सकता है।
 - भारत के IT क्षेत्र में विकास के अवसर देखने को मिल सकते हैं, हालाँकि H-1B वीजा प्रतिबंध जोखिम बने रहेंगे।
- **आव्रजन और वीजा:** H-1B वीजा प्रतिबंधों सहित कठोर आव्रजन नीतियों से अमेरिका में काम करने वाले भारतीय पेशेवरों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
 - भारत की IT कम्पनियों को अमेरिकी बाजारों में प्रतिभाओं को तैनात करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।
- **ऊर्जा और जलवायु:** जीवाश्म ईंधन पर ट्रम्प का ध्यान भारत की नवीकरणीय ऊर्जा महत्वाकांक्षाओं के विपरीत है, जिससे जलवायु सहयोग में मतभेद उत्पन्न हो रहा है।

निष्कर्ष और आगे की राह

- डोनाल्ड ट्रम्प का राष्ट्रपतित्व वैश्विक आर्थिक गतिशीलता को नया आकार दे सकता है, तथा अमेरिका में भारत के निवेश सहित व्यापार और भू-राजनीतिक संबंधों को प्रभावित कर सकता है।
- चुनौतियों के बावजूद, ट्रम्प के दूसरे कार्यकाल में अमेरिका के साथ भारत के संबंध एक परिवर्तनकारी दौर की ओर ले जा सकते हैं, जिसमें व्यापार, आव्रजन और कूटनीतिक मुद्दों पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता होगी।

Source: TH

RBI ने परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनियों (ARCs) के लिए मानदंड जारी किए

संदर्भ

- भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) ने उधारकर्ताओं के साथ बकाया के निपटान को सुव्यवस्थित करने के लिए परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनियों (ARCs) के लिए संशोधित मानदंड प्रस्तुत किए हैं।

दिशानिर्देशों की प्रमुख विशेषताएँ

- **बकाया राशि के निपटान हेतु रूपरेखा:** ARCs को निपटान को नियंत्रित करने के लिए बोर्ड द्वारा अनुमोदित नीति अपनानी होगी।
- **ऋण आकार के आधार पर विभेदित दृष्टिकोण:**
 - **1 करोड़ रुपये से अधिक बकाया के लिए:** अनुमोदन के लिए एक स्वतंत्र सलाहकार समिति (IAC) की सिफारिशों की आवश्यकता होती है, जिसमें तकनीकी, वित्तीय या कानूनी क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल होते हैं।
 - **1 करोड़ रुपये तक के बकाये के लिए:** हितों के टकराव से बचने के लिए निपटान प्रस्तावों को संबंधित वित्तीय परिसंपत्ति के अधिग्रहण में शामिल न होने वाले अधिकारियों द्वारा अनुमोदित किया जा सकता है।
- **वसूली सुरक्षा उपाय:** निपटान में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि निपटान का शुद्ध वर्तमान मूल्य (NPV) प्रतिभूतियों के प्राप्त करने योग्य मूल्य से कम न हो।

परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी(ARC)

- यह एक वित्तीय संस्थान है जो बैंकों और वित्तीय संस्थानों से NPA या खराब परिसंपत्तियों को खरीदता है ताकि वे अपनी बैलेंस शीट को त्रुटी मुक्त कर सकें।
 - केंद्रीय बजट 2021-22 में भारत में परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनियों की स्थापना की घोषणा की गई।
 - ARCs बैंकों और वित्तीय संस्थानों की संकटग्रस्त वित्तीय परिसंपत्तियों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे वित्तीय प्रणाली के समग्र स्वास्थ्य में सुधार होता है।
- ARCs को भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) द्वारा वित्तीय आस्तियों के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन (SARFAESI) अधिनियम, 2002 के अंतर्गत विनियमित किया जाता है।

गैर-निष्पादित परिसंपत्तियाँ (NPAs) क्या हैं?

- गैर-निष्पादित परिसंपत्तियाँ (NPAs) बैंकों या वित्तीय संस्थानों द्वारा जारी किए गए ऋण या अग्रिम राशि हैं, जो ऋणदाता के लिए अब धन नहीं लाती हैं, क्योंकि उधारकर्ता कम से कम 90 दिनों तक ऋण के मूलधन और ब्याज का भुगतान करने में विफल रहा है।

राष्ट्रीय परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी लिमिटेड(NARCL)

- NARCL एक सरकारी संस्था है, जिसकी स्थापना 2021 में की गई थी, जिसमें अधिकांश हिस्सेदारी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पास और शेष हिस्सेदारी निजी बैंकों के पास थी, तथा केनरा बैंक प्रायोजक बैंक था।
- यह वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अंतर्गत एक परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी के रूप में भारतीय रिजर्व बैंक के पास पंजीकृत है।

ARCs के कार्य

- खराब ऋणों का अधिग्रहण:** ARCs बैंकों और वित्तीय संस्थानों से रियायती मूल्य पर NPAs खरीदते हैं, जिससे ऋणदाताओं को अपनी बैलेंस शीट को साफ करने में सहायता मिलती है।
- संकटग्रस्त परिसंपत्तियों का समाधान:** खराब ऋणों को प्राप्त करने के पश्चात्, ARCs बकाया राशि की वसूली के लिए पुनर्गठन, एकमुश्त निपटान या परिसंपत्ति परिसमापन जैसी विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करते हैं।
- ऋणों का प्रतिभूतिकरण:** ARCs आगे की परिसंपत्ति अधिग्रहण के लिए धन एकत्रित करने हेतु, अंतर्निहित खराब ऋणों द्वारा समर्थित निवेशकों को प्रतिभूतियाँ या बाँड जारी कर सकते हैं।

निष्कर्ष

- ARCs भारत के वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र में एक महत्वपूर्ण तंत्र के रूप में कार्य करते हैं, जो गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (NPAs) के ज्वलंत मुद्दे का समाधान करते हैं तथा बैंकिंग क्षेत्र के स्वास्थ्य को बढ़ाते हैं।
- परिसंपत्ति वसूली एवं समाधान को सुव्यवस्थित करके, ARCs न केवल बैंकों को नए ऋण पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाती हैं, बल्कि वित्तीय स्थिरता और आर्थिक विकास में भी योगदान देती हैं।

Source: TH

वैश्विक आर्थिक संभावनाएँ (GEP) रिपोर्ट 2025

सन्दर्भ

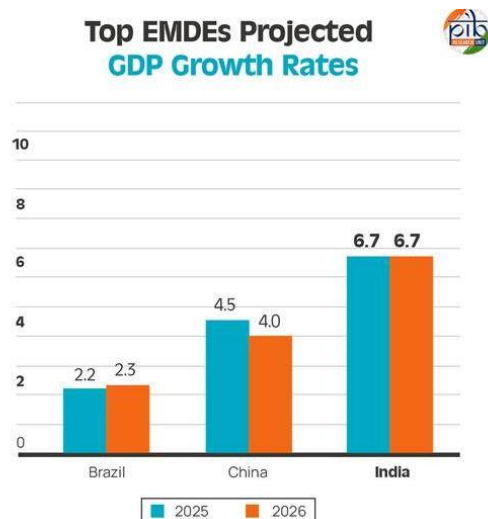
- विश्व बैंक ने वैश्विक आर्थिक संभावनाएँ (GEP) रिपोर्ट 2025 जारी की है।
 - यह विश्व बैंक समूह का प्रमुख अर्धवार्षिक प्रकाशन है जो वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रवृत्तियों और अनुमानों की जाँच करता है। इसमें उभरते बाजारों और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर बल दिया गया है।

प्रमुख विशेषताएँ

- वैश्विक अर्थव्यवस्था:** 2025 और 2026 दोनों में 2024 के समान गति से 2.7% की वृद्धि होने का अनुमान है।
 - वर्ष 2000 के बाद से उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (EMDEs) में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है, जो अब वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 45% का योगदान दे रहा है, जबकि सदी की शुरुआत में यह 25% था।
 - भारत, चीन और ब्राजील, तीन सबसे बड़े EMDEs, ने सदी की शुरुआत से सामूहिक रूप से वार्षिक वैश्विक विकास का लगभग 60% भाग संचालित किया है।
- व्यापार प्रतिबंध:** 2024 में नये वैश्विक व्यापार प्रतिबंध 2010-19 के औसत से पाँच गुना अधिक होंगे।
 - परिणामस्वरूप, समग्र आर्थिक विकास दर गिर गई - 2000 के दशक में 5.9% से 2020 के दशक में 3.5% तक।
- चुनौतियाँ और सिफारिशें:**
 - बढ़ते व्यापार तनाव से वैश्विक विकास प्रभावित हो सकता है। लगातार मुद्रास्फीति के कारण ब्याज दरों में अपेक्षित कटौती में देरी हो सकती है।
 - सही नीतियों के साथ, ये अर्थव्यवस्थाएँ कुछ चुनौतियों को महत्वपूर्ण अवसरों में भी बदल सकती हैं।
 - इस मध्य, सभी देशों को बहुपक्षीय संस्थाओं के सहयोग से वैश्विक व्यापार प्रशासन को सुदृढ़ करने के लिए मिलकर कार्य करना चाहिए।

भारत से संबंधित मुख्य बिंदु

- विकास:** भारत के वित्त वर्ष 2026 और वित्त वर्ष 2027 में सबसे तेजी से बढ़ने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था बने रहने की संभावना है (विकास दर - 6.7%), जो वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में इसके प्रभुत्व की पुष्टि करता है।
 - भारत के सेवा क्षेत्र में वृद्धि मजबूत रहने की संभावना है, जबकि विनिर्माण गतिविधि मजबूत होगी।



- **निवेश:** बढ़ते निजी निवेश, बेहतर कॉर्पोरेट बैलेंस शीट और अनुकूल वित्तपोषण स्थितियों से भारत की निवेश वृद्धि स्थिर रहने की संभावना है।

वृद्धि के कारण

- PM गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान के तहत बुनियादी ढाँचे का विकास। स्टार्टअप इंडिया और उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना जैसी पहलों के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा देते हुए, ये सुधार विनिर्माण, डिजिटल अर्थव्यवस्था एवं वित्तीय समावेशन जैसे क्षेत्रों में बदलाव ला रहे हैं।

निष्कर्ष

- विश्व बैंक और IMF दोनों द्वारा अनुमानित भारत के आर्थिक प्रदर्शन की निरंतर मजबूती, देश की लचीलेपन को रेखांकित करती है और इसके आर्थिक बुनियादी सिद्धांतों की निरंतर मजबूती को उजागर करती है, जिससे भारत वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण अभिकर्ता बन गया है।

विश्व बैंक का परिचय

- यह एक अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्था है जो पूँजी परियोजनाओं को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से विकासशील देशों की सरकारों को ऋण और अनुदान प्रदान करती है।
- इसकी स्थापना 1944 के ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के साथ की गई थी।
- इसमें दो संस्थाएँ शामिल हैं: अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (IBRD), और अंतर्राष्ट्रीय विकास संघ (IDA)।
- **अधिकार:** विश्व बैंक समूह के पास गरीबी को कम करने और सतत विकास का समर्थन करने का अधिदेश है।
 - संस्था शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, बुनियादी ढाँचे और पर्यावरणीय स्थिरता सहित कई क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करती है।
- **रिपोर्ट:** विश्व विकास रिपोर्ट (WDR), वैश्विक आर्थिक संभावनाएँ (GEP), व्यवसाय तैयार (B-READY), वैश्विक वित्तीय समावेशन (Findex) डेटाबेस, गरीबी और साझा समृद्धि रिपोर्ट।

Source: **PIB**

स्वस्थ आहार का व्यय वहन न कर पाने वाली जनसंख्या में वृद्धि

सन्दर्भ

- नेचर फूड नामक पत्रिका में प्रकाशित एक शोध के अनुसार, स्वस्थ आहार का व्यय वहन नहीं कर पाने वाली जनसंख्या का हिस्सा बढ़ रहा है।
 - यह संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन (FAO) और ग्लोबल अलायंस फॉर इम्प्रूव्ड न्यूट्रिशन के नेतृत्व में फूड सिस्टम काउंटडाउन पहल के तहत आयोजित किया गया था।

प्रमुख विशेषताएँ

- अध्ययन में खाद्य प्रणालियों के 42 प्रमुख संकेतकों का मूल्यांकन किया गया है, जिन्हें पाँच विषयों में वर्गीकृत किया गया है:
 - आहार, पोषण और स्वास्थ्य;
 - पर्यावरण, प्राकृतिक संसाधन और उत्पादन;
 - आजीविका, गरीबी और समानता;
 - लचीलापन;
 - शासन।
- 42 संकेतकों में से 20 2000 से वांछनीय दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।
- मध्यम से गंभीर खाद्य असुरक्षा का सामना करने वाली जनसंख्या में भी वृद्धि हुई है।
- ये संकेतक, जो वैश्विक स्तर पर खराब हो गए हैं, SDGs और अन्य वैश्विक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक प्रगति को कम करते हैं।

वैश्विक लक्ष्य

- संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) का लक्ष्य 2, 2030 तक भूख से मुक्त विश्व बनाने के संबंध में है।
- विश्व के लिए 2024 का वैश्विक भूख सूचकांक स्कोर 18.3 है, जिसमें 42 देश अभी भी भयावह या गंभीर भूख का सामना कर रहे हैं।
 - उप-सहारा अफ्रीका और दक्षिण एशिया में भूख सबसे गंभीर है, जहाँ संकट मानवीय स्तर तक बढ़ गया है।
- 2016 से भूख को कम करने की दिशा में बहुत कम प्रगति हुई है, और 2030 की लक्ष्य तिथि तक भूख को शून्य करने की संभावनाएँ बहुत कम हैं।

भारत में स्थिति

- ग्लोबल हंगर इंडेक्स (GHI) 2024 में भारत को 127 देशों में से 105वें स्थान पर रखा गया है, जो इसे भूख के स्तर के लिए "गंभीर" श्रेणी में रखता है।
- विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति 2023 रिपोर्ट में कहा गया है कि 2021-22 में भारत में लगभग 224 मिलियन लोगों को मध्यम या गंभीर खाद्य असुरक्षा का सामना करना पड़ा।

2030 तक भुखमरी को समाप्त करने के लिए भारत के प्रयास

- मध्याह्न भोजन कार्यक्रम:** इस कार्यक्रम का उद्देश्य सरकारी, स्थानीय निकाय और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में बच्चों की पोषण स्थिति में सुधार करते हुए नामांकन, प्रतिधारण एवं उपस्थिति को बढ़ावा देना है।
- खाद्य सुदृढ़ीकरण:** सरकार सार्वजनिक वितरण प्रणाली के भाग के रूप में फोर्टिफाइड चावल, गेहूँ का आटा और खाद्य तेलों को बढ़ावा देती है।
- राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013:** यह अधिनियम लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली (TPDS) के तहत सब्सिडी वाले खाद्यान्न प्राप्त करने के लिए ग्रामीण जनसंख्या के 75% और शहरी जनसंख्या के 50% तक कवरेज प्रदान करता है।

- **पोषण ट्रेकर:** महिला और बाल विकास मंत्रालय ने पोषण ट्रेकर ICT एप्लिकेशन को एक प्रमुख शासन उपकरण के रूप में विकसित किया है।
 - यह बच्चों में ऊँचाई, वजन, लिंग एवं उम्र के आधार पर स्टंटिंग, वेस्टिंग, कम वजन और मोटापे का गतिशील रूप से आकलन करने के लिए दिन-आधारित जेड-स्कोर के साथ WHO की विस्तारित तालिकाओं का उपयोग करता है।
- कोविड-19 प्रकोप के कारण होने वाले आर्थिक व्यवधानों के कारण गरीबों को होने वाली कठिनाइयों को कम करने के लिए प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना प्रारंभ की गई थी।
- सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 में देश में कुपोषण की समस्या के समाधान के लिए प्रत्यक्ष लक्षित हस्तक्षेप के रूप में पोषण अभियान, आंगनवाड़ी सेवाएँ और किशोरियों के लिए योजना जैसी प्रमुख योजनाएँ सम्मिलित हैं।

Source: DTE

भारत कॉफ़ी का 7वाँ सबसे बड़ा उत्पादक बना

सन्दर्भ

- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अनुसार, भारत अब वैश्विक स्तर पर सातवाँ सबसे बड़ा कॉफ़ी उत्पादक है, जिसका निर्यात पिछले वित्तीय वर्ष में 1.29 बिलियन डॉलर तक पहुँच गया।
 - यह 2020-21 में 719 मिलियन डॉलर के निर्यात से लगभग दोगुना है।

परिचय

- शीर्ष खरीदारों में इटली, बेल्जियम और रूस सम्मिलित हैं।
- भारत मुख्य रूप से बिना भुने कॉफ़ी बीन्स का निर्यात करता है, भुनी हुई और इंस्टेंट कॉफ़ी जैसे मूल्यवर्धित उत्पादों की माँग बढ़ रही है।
- कैफ़े संस्कृति के बढ़ने, अधिक डिस्पोजेबल आय और भारत में चाय की तुलना में कॉफ़ी को बढ़ती प्राथमिकता के कारण घरेलू खपत में भी वृद्धि हुई है।

कॉफ़ी उत्पादन

- ब्राजील विश्व का सबसे बड़ा कॉफ़ी उत्पादक है, जो वैश्विक उत्पादन में लगभग 40% का योगदान देता है, उसके बाद वियतनाम का स्थान आता है।
- **भारत दो प्रकार की कॉफ़ी का उत्पादन करता है:** अरेबिका और रोबस्टा।
 - कॉफ़ी मुख्य रूप से निर्यात उन्मुख वस्तु है और देश में उत्पादित कॉफ़ी का 65% से 70% निर्यात किया जाता है।
- **क्षेत्र:** कॉफ़ी पारंपरिक रूप से कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में फैले पश्चिमी घाटों में उगाई जाती है।
 - इसे आंध्र प्रदेश और ओडिशा के गैर-पारंपरिक क्षेत्रों के साथ-साथ पूर्वोत्तर राज्यों में भी उगाया जाता है।
- **अग्रणी राज्य:** कॉफ़ी उत्पादन में कर्नाटक सबसे आगे है, उसके बाद केरल और तमिलनाडु का स्थान है।

जलवायु परिस्थितियाँ

- कॉफी के पौधे 15 डिग्री सेल्सियस से 24 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान में पनपते हैं। इस सीमा से बाहर अत्यधिक तापमान विकास और उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है।
- भारत अपनी सभी कॉफी की खेती एक अच्छी तरह से परिभाषित दो-स्तरीय मिश्रित छायादार वितान के नीचे करता है, जिसमें सदाबहार फलीदार पेड़ सम्मिलित हैं।
 - छायादार पेड़ ढालयुक्त क्षेत्र में मृदा के कटाव को रोकते हैं; वे गहरी परतों से पोषक तत्वों को पुनर्चक्रण करके मृदा को समृद्ध करते हैं, जिससे कॉफी के पौधे को तापमान में मौसमी उतार-चढ़ाव से बचाया जा सकता है।

भारतीय कॉफी बोर्ड

- भारत सरकार ने वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में एक संवैधानिक अधिनियम "कॉफी अधिनियम VII, 1942" के माध्यम से 'कॉफी बोर्ड' की स्थापना की।
- बोर्ड में अध्यक्ष और सचिव तथा मुख्य कार्यकारी अधिकारी सहित 33 सदस्य सम्मिलित हैं।
- यह एक ऐसा संगठन है जो भारत में कॉफी उत्पादन को बढ़ावा देता है।

Source: AI

संक्षिप्त समाचार

कोणार्क मंदिर

संदर्भ

- सिंगापुर के राष्ट्रपति थर्मन षण्मुगारत्नम ने ओडिशा के पुरी जिले में कोणार्क स्थित सूर्य मंदिर का दौरा किया।

कोणार्क सूर्य मंदिर

- **देवता:** कोणार्क सूर्य मंदिर 13वीं शताब्दी का मंदिर है जो हिंदू सूर्य देवता सूर्य को समर्पित है।
- **इतिहास:** मंदिर का निर्माण पूर्वी गंगा राजवंश के राजा नरसिंहदेव प्रथम के शासनकाल के दौरान लगभग 1250 ई. में हुआ था।
- **सांस्कृतिक महत्त्व:** इसे 1984 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। यह हिंदुओं के लिए एक प्रमुख तीर्थ स्थल बना हुआ है, जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के महीने में चंद्रभागा मेले के लिए यहाँ एकत्रित होते हैं।
- **अन्य नाम:** यूरोपीय नाविकों के लेखों में इस मंदिर को "ब्लैक पैगोडा" कहा जाता था क्योंकि यह एक विशाल स्तरित मीनार जैसा दिखता था जो काले रंग का दिखाई देता था।
 - इसी प्रकार, पुरी में जगन्नाथ मंदिर को "व्हाइट पैगोडा" कहा जाता था।
- **वास्तुकला:** मंदिर को 7 घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले एक विशाल रथ के आकार में डिज़ाइन किया गया था, जिसके आधार पर 12 जोड़ी (कुल 24) भव्य रूप से सजाए गए पहिए लगे हुए थे।

Source: TH

नारायण गुरु

संदर्भ

- **नारायण गुरु डिजिटल रिसर्च रिसोर्स प्लेटफॉर्म (NGDRRP)**, एक व्यापक डिजिटल संग्रह जिसे 2023 में लॉन्च किया जाएगा, मई 2025 तक पूरी तरह से ऑनलाइन हो जाएगा।

परिचय

- **प्रारंभिक जीवन:** नारायण गुरु का जन्म 1856 में केरल के चेम्पाजंथी में एझावा जाति के एक परिवार में हुआ था, जो पारंपरिक रूप से कठोर जाति व्यवस्था के अंतर्गत हाशिए पर थी।
- **शिक्षाएँ:** नारायण गुरु ने समानता, सार्वभौमिक भाईचारे और आध्यात्मिक उत्थान के सिद्धांतों पर बल दिया।
 - उनका प्रसिद्ध कथन, "एक जाति, एक धर्म, सभी के लिए एक ईश्वर", एक समावेशी समाज के उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है।

प्रमुख योगदान

- **मंदिर प्रवेश आंदोलन:** नारायण गुरु ने हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए मंदिर तक पहुँच सुनिश्चित करने के प्रयासों का नेतृत्व किया।
 - उन्होंने 1888 में अरुविप्पुरम शिव मंदिर का अभिषेक किया, जिसमें जाति के आधार पर मंदिर में प्रवेश को प्रतिबंधित करने वाले रूढ़िवादी मानदंडों को चुनौती दी गई।
- **सामाजिक समानता को बढ़ावा देना:** उन्होंने SNDP योगम (श्री नारायण धर्म परिपालन योगम) के माध्यम से सुधारों को संस्थागत रूप देते हुए अस्पृश्यता, जातिगत भेदभाव और सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध सक्रिय रूप से युद्ध लड़ा।
- **साहित्यिक योगदान:** आत्मोपदेश शतकम और दैव दशकम जैसे ग्रंथ आध्यात्मिक एवं नैतिक जीवन के लिए उनकी दार्शनिक अंतर्दृष्टि तथा व्यावहारिक मार्गदर्शन को दर्शाते हैं।

Source: TH

पंजाब में प्रजामंडल आंदोलन

संदर्भ

- 20 जनवरी को सेवा सिंह ठीकरीवाला की पुण्यतिथि है, जिन्होंने पंजाब में प्रजा मंडल आंदोलन का नेतृत्व किया था।

परिचय

- यह पंजाब की तत्कालीन रियासतों के शासकों के विरुद्ध एक स्वशासन आंदोलन था।
- **उद्देश्य:** जनता की नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा करना, दमनकारी करों का विरोध करना, किसानों की स्थिति में सुधार की माँग करना, शैक्षणिक संस्थान खोलना और एक जिम्मेदार सरकार की स्थापना करना।
- **क्षेत्र:** यह आंदोलन प्रारंभ में पटियाला, नाभा, जींद, मलेरकोटला और फरीदकोट रियासतों में सक्रिय था।

Source: IE

चोल साम्राज्य में महिलाएँ

संदर्भ

- इतिहासकार अनिरुद्ध कनीसेट्टी की पुस्तक, लॉर्ड्स ऑफ अर्थ एंड सी: ए हिस्ट्री ऑफ द चोल एम्पायर, चोल साम्राज्य के पहलुओं पर प्रकाश डालती है, जिसमें सेम्बियन महादेवी जैसी महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका भी सम्मिलित है।

परिचय

- चोल राजवंश, भारतीय इतिहास में सबसे लंबे समय तक शासन करने वाले साम्राज्यों में से एक है, जो 9वीं से 13वीं शताब्दी ई. तक विकसित हुआ।
- करिकला चोल ने राजवंश की नींव रखी, हालाँकि विजयालय चोल के दौरान ही राजवंश ने अपना महत्वपूर्ण उदय प्रारंभ किया।
- राजराजा चोल प्रथम (985-1014 ई.) और उनके बेटे राजेंद्र चोल प्रथम (1014-1044 ई.) के शासनकाल में साम्राज्य अपने चरम पर पहुँच गया।

चोल प्रशासन

- साम्राज्य मंडलम (प्रांत), वलनाडु (जिले) और नाडु (गाँव) में विभाजित था।
- गाँवों में स्थानीय स्वशासन प्रणाली, जिसे उर, सभा और नगरम के नाम से जाना जाता था, उनके प्रशासन की पहचान थी।

कला और वास्तुकला में योगदान

- मंदिर वास्तुकला:** बृहदेश्वर मंदिर (तंजावुर) राजराजा चोल प्रथम द्वारा निर्मित एक वास्तुशिल्प चमत्कार है और यह यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है।
 - गंगईकोंडा चोलपुरम मंदिर और ऐरावतेश्वर मंदिर अन्य प्रतिष्ठित उदाहरण हैं।
- कांस्य मूर्तिकला:** चोलों ने कांस्य ढलाई में उत्कृष्टता प्राप्त की, विशेष रूप से नटराज मूर्तियों के निर्माण में, जो भगवान शिव को ब्रह्मांडीय नर्तक के रूप में दर्शाती हैं।

समुद्री व्यापार और विस्तार

- चोल नौसेना उस समय विश्व की सबसे शक्तिशाली नौसेनाओं में से एक थी।
- राजेंद्र चोल प्रथम ने श्रीलंका, मालदीव एवं श्रीविजय साम्राज्य (आधुनिक इंडोनेशिया) सहित दक्षिण-पूर्व एशिया में सफल अभियान चलाए और व्यापार तथा सांस्कृतिक संबंध स्थापित किए।

चोल साम्राज्य में महिलाओं की भूमिका

- गंदारादित्य चोल (लगभग 950-957 ई.) की रानी सेम्बियन महादेवी, चोल राजवंश के परिवर्तनकारी काल के दौरान एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थीं।
 - गंदारादित्य के असामयिक निधन के पश्चात्, वह अपने बेटे मधुरंतक उत्तम चोल की रीजेंट बनकर उभरीं।
 - उन्हें तमिलनाडु के कैलासनाथर मंदिर सहित कई मंदिरों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है।

- राजराजा प्रथम की बहन कुंदवई अपने भाई की विश्वसनीय सलाहकार थीं और उन्होंने उनके प्रशासन का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
 - उन्होंने वैदिक विद्यालयों और चिकित्सा संस्थानों की स्थापना के लिए उदारतापूर्वक दान दिया।

Source: TH

रत्नागिरी बौद्ध परिसर में उत्खनन

समाचार में

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) ने 60 वर्षों के पश्चात् ओडिशा के रत्नागिरी में 5वीं-13वीं शताब्दी के बौद्ध परिसर में उत्खनन पुनः प्रारंभ की।

बौद्ध उत्खनन के संबंध में

- रत्नागिरी, उदयगिरी और ललितगिरी के साथ ओडिशा के डायमंड ट्राएंगल का भाग है, जो प्राचीन बौद्ध स्थलों के लिए जाना जाता है।
- यह बौद्ध शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र था, जो नालंदा का प्रतिद्वंद्वी था, तथा यहाँ बौद्ध धर्म के महायान और वज्रयान दोनों संप्रदायों का निवास था।
- खोजें:** टीम ने एक विशाल बुद्ध सिर, एक विशाल ताड़ का पेड़, एक प्राचीन दीवार और 8वीं और 9वीं शताब्दी ईस्वी के बौद्ध अवशेष खोजे हैं।
 - अंतिम उत्खनन 1958 और 1961 के मध्य हुआ था, जिसमें ईंटों से बने स्तूप, मठ परिसर और अनेक मन्त्र स्तूपों का पता चला था।
 - 7वीं शताब्दी में ओडिशा आए चीनी भिक्षु ह्वेन त्सांग ने भी संभवतः इस स्थल का दौरा किया होगा।
- ऐतिहासिक महत्व:** बौद्ध धर्म के साथ ओडिशा का ऐतिहासिक संबंध सम्राट अशोक (304-232 ईसा पूर्व) से प्रारंभ होता है, जिन्होंने कलिंग पर आक्रमण के पश्चात् बौद्ध धर्म अपना लिया था।
 - ओडिशा ने दक्षिण-पूर्व एशिया में बौद्ध धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, विशेषकर व्यापारिक संबंधों के माध्यम से।
 - भौमकारा राजवंश (8वीं-10वीं शताब्दी) के शासनकाल में राज्य का उत्कर्ष हुआ।
 - उत्खनन का लक्ष्य:** इसका उद्देश्य स्थल के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना तथा ओडिशा के दक्षिण-पूर्व एशियाई संस्कृति से संबंधों के साक्ष्य ढूंढना था।



ODISHA & SOUTHEAST ASIA

■ Odisha has long enjoyed maritime and trade links with Southeast Asian countries. The state annually holds Baliyatra (voyage to Bali) – a festival to commemorate the maritime and cultural links between Kalinga and Bali and other South and Southeast Asian regions

■ Mauryan Emperor Ashoka, who invaded Kalinga in 261 BC but eventually embraced Buddhism after the war, helped spread the religion to Sri Lanka, and Central and Southeast Asia

Source :IE

एंटीटी लॉकर

समाचार में

- इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) के अंतर्गत राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस प्रभाग (NeGD) ने एंटीटी लॉकर विकसित किया है, जो एक अत्याधुनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जिसे व्यवसाय/संगठन दस्तावेजों के प्रबंधन और सत्यापन में परिवर्तन लाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

एंटीटी लॉकर के संबंध में

- एंटीटी लॉकर एक सुरक्षित, क्लाउड-आधारित डिजिटल प्लेटफॉर्म है जिसे भारत में विभिन्न संगठनों के लिए व्यावसायिक दस्तावेजों के भंडारण, साझाकरण और सत्यापन को सरल बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

प्रमुख विशेषताएँ

- लक्षित संस्थाएँ:** बड़े निगम, MSMEs, स्टार्टअप, ट्रस्ट, सोसाइटी और अन्य संगठन।
 - भारत की डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना पहल और बेहतर डिजिटल शासन के लिए केंद्रीय बजट 2024-25 के दृष्टिकोण के साथ संरेखित करता है।
- सुरक्षित डिजिटल अवसंरचना:** सुरक्षित दस्तावेज़ भंडारण के लिए 10 GB एन्क्रिप्टेड क्लाउड स्टोरेज।
 - प्रमाणीकरण के लिए कानूनी रूप से मान्य डिजिटल हस्ताक्षर।
 - सुरक्षित और जवाबदेह पहुँच के लिए आधार-प्रमाणित, भूमिका-आधारित पहुँच प्रबंधन।
- एकीकरण क्षमताएँ:** सरकारी डेटाबेस के साथ एकीकरण के माध्यम से वास्तविक समय पर पहुँच और सत्यापन।
- निम्नलिखित प्रणालियों के साथ सहज संपर्क:**
 - कॉर्पोरेट मामलों का मंत्रालय (MCA)
 - वस्तु और सेवा कर नेटवर्क (GSTN)
 - विदेश व्यापार महानिदेशालय (DGFT)
- सहमति-आधारित साझाकरण:** संवेदनशील व्यावसायिक जानकारी का सुरक्षित साझाकरण सुनिश्चित करता है।

लाभ

- परिचालन दक्षता:** प्रशासनिक ओवरहेड और दस्तावेज़ प्रसंस्करण समय को कम करता है।
 - दस्तावेज़ साझाकरण और अनुपालन प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करता है।
 - बढ़ी हुई जवाबदेही के लिए सभी दस्तावेज़-संबंधी गतिविधियों को ट्रैक करता है।
- बेहतर एकीकरण:** सरकारी प्लेटफॉर्म के साथ सीधा एकीकरण कुशल अनुपालन और रिपोर्टिंग को सक्षम बनाता है।
- रणनीतिक प्रभाव:** एंटीटी लॉकर भारत के डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे का भाग है और डिजिटल इंडिया कार्यक्रम के साथ संरेखित है, जो शासन में सुधार एवं आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए MeitY की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

Source: PIB

न्यूरोमॉर्फिक डिवाइस

समाचार में

- बेंगलुरु स्थित जवाहरलाल नेहरू उन्नत वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र (JNCASR) के वैज्ञानिकों ने एक क्रांतिकारी न्यूरोमॉर्फिक उपकरण विकसित किया है जो दर्द के प्रति मानव शरीर की प्रतिक्रिया का अनुकरण करता है।

प्रमुख विशेषताएँ

- दर्द प्रतिक्रिया सिमुलेशन:** नोसिसेप्टर्स के कार्य की नकल करता है, हमारे शरीर में सेंसर जो दर्द का पता लगाते हैं और सुरक्षात्मक प्रतिक्रियाओं को ट्रिगर करते हैं।
 - आदत प्रक्रिया का अनुकरण करता है, जहाँ दर्द के बार-बार संपर्क में आने से समय के साथ संवेदनशीलता कम हो जाती है।
- अनुकूलनशीलता:** अपनी प्रतिक्रिया को गतिशील रूप से सीखता और समायोजित करता है, ठीक उसी तरह जैसे मानव शरीर पुराने तनावों के अनुकूल होता है।

Source: TOI

व्हाइट गुड्स

समाचार में

- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने व्हाइट गुड्स के लिए उत्पादन-लिंकड प्रोत्साहन (PLI) योजना के तीसरे दौर के लिए 24 कंपनियों का चयन किया है।

परिचय

- व्हाइट गुड्स बड़े घरेलू उपकरणों को संदर्भित करते हैं, जिनका उपयोग सामान्यतः घरेलू उद्देश्यों, जैसे कि खाना पकाने, सफाई और रेफ्रिजरेशन के लिए किया जाता है।
- वे मूल रूप से सफेद तामचीनी-लेपित स्टील में निर्मित होते थे, जिससे उन्हें उनका नाम मिला, हालाँकि अब वे विभिन्न रंगों में आते हैं। उदाहरण के लिए: रसोई के उपकरण, कपड़े धोने के उपकरण आदि।
- इसके अतिरिक्त, ब्राउन गुड्स हल्के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हैं, जो मुख्य रूप से मनोरंजन और संचार के लिए हैं। उदाहरण: टीवी, रेडियो आदि

Source: PIB

विकास इंजन (Vikas Engine)

समाचार में

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने महेन्द्रगिरि स्थित प्रोपल्शन कॉम्प्लेक्स में अपने विकास द्रव इंजन को पुनः चालू करने का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया।

विकास इंजन(Vikas Engine)

- यह 80 टन के नाममात्र थ्रस्ट वाला वर्कहोर्स इंजन है।

- यह इसरो के लॉन्च वाहनों के लिक्विड स्टेज को शक्ति प्रदान करने वाला एक प्रमुख घटक है, जिसमें PSLV और GSLV के दूसरे चरण, GSLV के लिक्विड स्ट्रैपॉन और LVM3 के मुख्य लिक्विड स्टेज सम्मिलित हैं।
 - भविष्य के लॉन्च वाहनों में बूस्टर स्टेज रिकवरी को सक्षम करने के लिए थ्रस्ट को कम करने वाले लिक्विड इंजन महत्वपूर्ण हैं।
- इसे इसरो के लिक्विड प्रोपल्शन सिस्टम सेंटर द्वारा विकसित किया गया है।

Source: TH

अभ्यास ला पेरिस

समाचार में

- स्वदेशी रूप से डिजाइन किया गया निर्देशित मिसाइल विध्वंसक INS मुंबई बहुराष्ट्रीय अभ्यास ला पेरिस के चौथे संस्करण में भाग ले रहा है।

अभ्यास के संबंध में

- यह अभ्यास 16 से 24 जनवरी तक मलक्का, सुंडा और लोम्बोक के रणनीतिक जलडमरूमध्य में आयोजित किया जाएगा, जो हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ता है।
- **भाग लेने वाले देश:** ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, भारत, इंडोनेशिया, मलेशिया, सिंगापुर, U.K. और U.S. इस अभ्यास में सम्मिलित हैं।
- **रणनीतिक महत्व:** यह अभ्यास समुद्री सुरक्षा को मजबूत करने, नौसेनाओं के मध्य अंतर-संचालन क्षमता विकसित करने और समुद्री संकटों में सामूहिक कार्रवाई को बढ़ाने पर केंद्रित है, विशेष रूप से विभिन्न जोखिमों के प्रति संवेदनशील रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण जलडमरूमध्य में।
 - भारत की भागीदारी एक नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय समुद्री व्यवस्था के लिए इसके मजबूत तालमेल, समन्वय और प्रतिबद्धता को प्रकट करती है।
 - यह अभ्यास भारत के SAGAR (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) के दृष्टिकोण के अनुरूप है, जिसका उद्देश्य समुद्री सहयोग को बढ़ाना और एक सुरक्षित हिंद-प्रशांत क्षेत्र सुनिश्चित करना है।

Source: TH

